पंजीकरण

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए कॉलेज में ऑफलाइन या https://forms.gle/ezsXPoPFHGC4jXNA8 पर ऑनलाइन पंजीकरण करना आवश्यक है। पंजीकरण शुल्क कॉलेज के प्राचीन इतिहास विभाग में नगद में अथवा एनईएफटी/यूपीआई/ऑनलाइन माध्यम से जमा किया जाना चाहिए।

पंजीकरण शुल्क

प्रतिभागी	शुल्क
शिक्षक	1000/-
शोधार्थी	600/-
विद्यार्थी	400/-

ऑनलाइन पंजीकरण हेतु बैंक विवरण

- Account Name: **CMP SPECIAL GRANT ACCOUNT**
- Account Number: **86161010001460**
- Bank Name: **CANARA BANK**
- Branch: **PRAYAG BRANCH, PRAYAGRAJ**
- IFSC: **CNRB0018616**

चौधरी महादेव प्रसाद

महाविद्यालय के संस्थापक

स्थान: डॉ प्यारेलाल श्रीवास्तव प्रेक्षागृह,
सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज

मुख्य संरक्षक

प्रो. संगीता श्रीवास्तव
माननीय कुलपति,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

संरक्षक

चौधरी जीतेंद्र नाथ सिंह
अध्यक्ष, कायस्थ पाठशाला एवं
अध्यक्ष, शासकीय निकाय,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

संरक्षक

प्रो. पंकज कुमार
अधिष्ठाता, महाविद्यालय विकास
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज

अध्यक्ष

प्रो. अजय प्रकाश खरे
प्राचार्य,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

संयोजक

डॉ अर्चना श्रीवास्तव
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सह-संयोजक

डॉ भावना चौहान
एसोसिएट प्रोफेसर,
प्राचीन इतिहास विभाग,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

आयोजन सचिव

डॉ नीरज कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर,
मध्यकालीन इतिहास विभाग,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

डॉ गोविन्द गौरव
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
सी एम पी डिग्री कॉलेज, प्रयागराज

सलाहकार समिति

डॉ भूपेन्द्र कुमार
डॉ राजेन्द्र श्रीवास्तव
डॉ सत्यम्वदा सिंह
डॉ बबीता अग्रवाल
डॉ अर्चना त्रिपाठी
डॉ दीनानाथ
डॉ रश्मि गुप्ता
डॉ नीता सिन्हा
डॉ मनीष सिन्हा
डॉ आभा सिंह
डॉ सुरेन्द्र पाल सिंह
डॉ आभा त्रिपाठी
डॉ सरिता श्रीवास्तव
डॉ रुचिका वर्मा

आयोजन समिति

डॉ सरोज सिंह
डॉ रितु रघुवंशी
डॉ देवेन्द्र प्रताप मिश्रा
डॉ द्रुपद कुमार
डॉ प्रिया सोनी खरे
डॉ नफीस अहमद
डॉ अंजनी कुमार
डॉ कमल कृष्ण राय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दुर्लभ पाण्डुलिपि प्रदर्शनी

21-23 नवम्बर 2022

एवं

राष्ट्रीय संगोष्ठी

23 नवम्बर 2022

"पाण्डुलिपियों में प्रतिबिम्बित भारतीय संस्कृति के विविध आयाम"

आयोजक

प्राचीन इतिहास विभाग
सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज
(इलाहाबाद विश्वविद्यालय का संघटक महाविद्यालय)
प्रयागराज, उ.प्र., भारत
और
राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय
(संस्कृति विभाग, उ.प्र.), प्रयागराज
के संयुक्त तत्वाधान में

सी. एम. पी. डिग्री कॉलेज

सी.एम.पी. डिग्री कॉलेज (चौधरी महादेव प्रसाद महाविद्यालय) इलाहाबाद विश्वविद्यालय का एक संघटक महाविद्यालय है। इसकी स्थापना वर्ष 1950 में महान समाज सुधारक और शिक्षाविद् चौधरी महादेव प्रसाद जी ने मूल्यपरक एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके राष्ट्र के विकास में योगदान करने की उद्देश्य से की थी। महाविद्यालय 'कायस्थ पाठशाला' के अंतर्गत संचालित है, जो एशिया के सबसे बड़े ट्रस्टों में से एक है। कॉलेज में चार संकाय हैं जो कला, विज्ञान, वाणिज्य और विधि में विभिन्न स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों और शोध कार्यक्रमों में पंजीकृत लगभग 15,000 छात्र-छात्राओं को शिक्षा दे रहे हैं। हाल ही में भारत सरकार के जैव-प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा डी बी टी स्टार कॉलेज योजना के सुदृढ़ीकरण नीति के तहत कॉलेज का चयन किया गया है। कॉलेज समाज के सभी वर्गों के छात्रों की जरूरतों को पूरा करने और छात्रों के सर्वांगीण विकास में योगदान करने की दृष्टि से लगातार प्रयत्नशील और समर्पित है।

राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय

भारत की गौरवशाली परम्परा की वाहक सांस्कृतिक धरोहर दुर्लभ पाण्डुलिपियों के सम्यक संरक्षण के उद्देश्य से उत्तर प्रदेश सरकार के द्वारा वर्ष 1973 में राजकीय पाण्डुलिपि पुस्तकालय की स्थापना प्रयागराज में की गयी। पुस्तकालय में प्रमुख रूप से वेद, उपनिषद, पुराण, स्तोत्र, व्याकरण, काव्य, न्याय, योग, मीमांसा, ज्योतिष, आयुर्वेद, रसायन, गणित, आदि विषयों पर विभिन्न भाषाओं की दस हजार से अधिक दुर्लभ एवं प्राचीन पाण्डुलिपियाँ संग्रहीत है। पुस्तकालय विशेष रूप से पाण्डुलिपियों के संरक्षण के साथ ही उनके सर्वेक्षण, जन उपयोगी प्रकाशन, प्रदर्शनी, कार्यशाला आयोजन आदि कार्यों में निरंतर सक्रिय रहता है।

संगोष्ठी संकल्पना

अध्यात्म प्रधान भारतीय संस्कृति की चिरस्थायिता के मूल में उसकी सांस्कृतिक धरोहर सर्वोपरि है। इस धरोहर की संवाहक दुर्लभ पाण्डुलिपियाँ हमारे सांस्कृतिक ज्ञान को सार्थकता प्रदान करती हैं। ये पाण्डुलिपियाँ मानव चेतना एवं स्मृतियों का जीवित इतिहास हैं। इन स्मृतियों को जीने की तथा भावी पीढ़ी को हस्तांतरित करने की स्वाभाविक चेतना मानव प्रजाति में होती है। इसी विकास परक चेतना ने ध्वनि से भाषा का विकास किया और भाषा को लिपियों के माध्यम से व्यक्त किया। लेखन कला के विकास के साथ ही लेखन सामग्रियाँ भी नित नवीन प्रयोगों की साक्षी बनी। प्रस्तर, ताड़पत्र, भोजपत्र, ताम्रपत्र तथा पट से कागज तक की उसकी यात्रा अनुभव एवं अनुसंधान का ही वृतांत है। ताड़पत्र एवं भोजपत्र के हल्के पीत या पाण्डु रंग ने ही 'पाण्डुलिपि' शब्द को जन्म दिया। ये हस्तलिखित पाण्डुलिपियाँ मानव इतिहास, चेतन, अनुभवों एवं उसके परिवेश का सुरक्षित दस्तावेज हैं। ये जर्द पाण्डुलिपियाँ हजारों की संख्या में मठों, मंदिरों, स्थपति परिवारों, पुस्तकालयों, संग्रहालयों एवं व्यक्तिगत संग्रहों में कैद हमारी बाट जोह रही हैं कि कब कोई आए, इन्हे पढ़े और इसमें संचित ज्ञान को प्रकाश में लाए। इसमें संरक्षित तथ्य कोई जड़ नहीं वरन् चेतन, जागृत इतिहास है। अतीत में समय-समय पर इन पाण्डुलिपियों की प्रतिलिपि तैयार कर इनका संरक्षण किया जाता था किन्तु कागज के प्रयोग के बाद उपेक्षित दुर्लभ पाण्डुलिपियों का संरक्षण एवं रखरखाव एक दुष्कर कार्य है। इस प्रदर्शनी और राष्ट्रीय संगोष्ठी के माध्यम से ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में पांडुलिपियों की महत्ता को समझना, उसका संरक्षण करना तथा उसमें निहित नवीन तथ्यों की खोज एवं जिज्ञासा जागृत करना प्रमुख उद्देश्य है। इससे भारत की सांस्कृतिक धरोहर 'पाण्डुलिपियों' को तो पुनर्जीवन मिलेगा ही साथ ही भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के विविध आयामों यथा धर्म, दर्शन, राजनीति, कला, स्थापत्य, ज्योतिष, आयुर्वेद एवं विज्ञान संबंधी पाण्डुलिपियों के पुनरावलोकन की प्रेरणा भी मिलेगी।

संगोष्ठी के उप-विषय

1. पाण्डुलिपि और उसके प्रकार
2. पाण्डुलिपि और उसकी संरक्षण विधियाँ
3. पाण्डुलिपि में सौंदर्यबोध
4. पाण्डुलिपि का रचनाशास्त्र
5. पाण्डुलिपि के माध्यम से लिपियों के विकास का विश्लेषण
6. पाण्डुलिपियों में प्रतिबिम्बित सांस्कृतिक एवं राजनीतिक दर्शन
7. पाण्डुलिपियों में उद्धृत विज्ञान, ज्योतिष एवं चिकित्सा
8. पाण्डुलिपियों में पर्यावरणीय विमर्श
9. पाण्डुलिपियों में वर्णित प्रयाग/इलाहाबाद

शोध सारांशिका हेतु निर्देश

तीन दिवसीय दुर्लभ पाण्डुलिपि प्रदर्शनी के अंतिम दिन दिनांक 23 नवम्बर को निर्धारित राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र वाचन हेतु उपरोक्त उप-विषयों और मुख्य विषय पर शोध सारांशिका आमंत्रित हैं। शोध सारांशिका (अधिकतम 300 शब्दों में) अंग्रेजी में (टाइम्स न्यू रोमन, 12 फ़ॉन्ट) या हिंदी में (कृति देव-010, 14 फ़ॉन्ट) वर्ड फाइल में (सॉफ्ट कॉपी) में संगोष्ठी के संयोजक को ईमेल: **cmpancienthistory@gmail.com** पर प्रेषित किया जाना चाहिए।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

दुर्लभ पाण्डुलिपि प्रदर्शनी	**21-23 नवम्बर 2022**
राष्ट्रीय संगोष्ठी	**23 नवम्बर 2022**
सारांशिका जमा करने की अंतिम तिथि	**19 नवम्बर 2022**
सारांशिका की स्वीकृति की सूचना	**20 नवम्बर 2022**

संपर्क विवरण

मोबाइल न. : 9450138011, 8858958613
ईमेल : cmpancienthistory@gmail.com,
nsinghchandel178@gmail.com, drdpmishra80@gmail.com